

## Contemporary India -9

# वेतन और उपहारों के रूप में भारत से इंग्लैंड तक धन का निकास

सेवानिवृत्त अंग्रेज अधिकारी आम तौर पर इंग्लैंड लौट जाते थे लेकिन भारत सरकार उन्हें अपनी पेंशन का भुगतान करना पड़ता था। नौकरीपेशा अंग्रेज अपने परिवारों को पैसे भेजते थे जिनके परिवार इंग्लैंड में रहते थे। भारतीय राजाओं द्वारा अंग्रेज अधिकारियों को दिया जाने वाला चढ़ावा भी भेजा जाता था इंग्लैंड में। ईस्ट इंडिया कंपनी के वर्णन से यह भी स्पष्ट होता है कि बंदरगाह कलकत्ता से इंग्लैंड को भारी मात्रा में हीरे और मोतियों का निर्यात किया जाता था। इसके अतिरिक्त ईस्ट इंडिया कंपनी के मुनाफ़े अंग्रेज़ों ने लगभग 60 लाख पाउंड ब्रिटेन भेजे।

1758-65. प्लासी के युद्ध के बाद स्थिति और भी गंभीर हो गई अंग्रेज़ों ने भारत की अर्थव्यवस्था पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया।

# विशाल ब्रिटिश सार्वजनिक ऋण के लिए भारतीयों द्वारा ब्याज का भुगतान

ईस्ट इंडिया कंपनी ने कई युद्धों में भाग लिया था जिसके लिए उसने सार्वजनिक ऋण जुटाया था विदेश से। वर्ष 1900 तक सार्वजनिक ऋण की राशि 22 करोड़ 40 लाख पाउंड तक पहुँच गयी। कुछ अंग्रेज विद्वानों का मत है कि इस सार्वजनिक ऋण का एक बड़ा भाग विकास पर खर्च किया गया (रेलवे और कृषि आदि ) अतः अधिकांश व्यय भारत के हित में किया गया। लेकिन असल में ऐसा नहीं था. वस्तुतः रेलवे एवं सिंचाई योजनाओं का विकास हुआ यह पूरी तरह से अंग्रेज़ों के हित में था क्योंकि अंग्रेज़ों ने इस पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था लेकिन भारत को इस विशाल सार्वजनिक ऋण पर ब्याज का भुगतान करना पड़ा।

दादाभाई नौरोजी ने एक बार टिप्पणी की थी कि यह एक महान षड्यंत्र था। भारत का पैसा ब्याज के रूप में विदेश भेजा जाता था और वही पुनः जनता

को विकास के रूप में रूप में भारत को उधार दिया जाता था

ऋण. इसके अलावा, इंग्लैंड में नागरिक और सैन्य प्रभार, स्टोर खरीद और विदेशी पर ब्याज पूंजी निवेश, सब भारत सरकार को पूरा करना था क्योंकि भारत फंस गया था गुलामी की जंजीर में। इस प्रकार, भारत का धन विभिन्न रूपों में इंग्लैंड भेजा जा रहा था। इस व्यवस्था ने भारत को चकनाचूर कर दिया। भारत की अर्थव्यवस्था बहुत खराब होने का प्रमुख कारण भारत की धन-संपदा का निष्कासन था